हमारा परमेश्वर आत्मा की प्रेरणा देने वाला है

ऐसे पाठ के बाद कि परमेश्वर ने अपने आपको कैसे प्रकट किया है, इस बात में आश्चर्य नहीं होना चाहिए कि हमें इस पर विचार करने की आवश्यकता कि परमेश्वर ने अपना संदेश देने वालों को कैसे प्रेरणा दी। परमेश्वर की प्रेरणा प्रकाशन देने का एक विशेष माध्यम है। इस पाठ में हम अपने परमेश्वर की दो पारस्परिक पहलुओं में ''प्रेरणा देने वाले'' के रूप में बात करेंगे, जिसमें दोनों का सम्बन्ध हमारे साथ है।

हम पर उसका प्रभाव

पहले तो, परमेश्वर प्रेरणा देने वाला है क्योंकि जो वह है और जो कुछ वह करता है, उसमें उससे प्रभावित होने वालों पर आनन्ददायक, उत्साह देने वाला और उल्लासित करने वाला प्रभाव पड़ता है। वही सच्चा और जीवित परमेश्वर है जिसने महान कार्य किया और करता रहता है। उसकी महानता तथा सामर्थ सृष्टि के उसके कार्य तथा हमारे अन्दर जीवन के दान में दिखाई देती है। हम जानते हैं कि वह जीवन का कर्त्ता है। हमें उसमें सब बातों का आरम्भ दिखाई देता है। हम उसे इन सबके चलाने वाले के रूप में जानते हैं। वह जीवन को दिशा देकर इतिहास को सार्थक बनाता है। हम उसे जीवन को बनाए रखने वाले के रूप में जानते हैं। हमारा जीवन उसकी सामर्थ से बना रहता है। उसकी उपस्थिति का विशेष महत्व है क्योंकि हम उसी के लिए जीवित हैं। उसी में हम आश्वस्त होते हैं कि भविष्य में हमारे लिए प्रतिज्ञा है; उसने समस्त संसार को अपने हाथों में रखा हुआ है।

हमारे सृष्टिकर्त्ता तथा अगुआई देने वाले के रूप में परमेश्वर की हमारी धारणाएं हमारी वास्तविकता का भाग हैं। वे अस्तित्व के हमारे कारण को दिखाती हैं। जब हम परमेश्वर में भरोसा रखते हैं, तो जीवन मात्र अस्तित्व से बढ़कर हो जाता है। हमारी दिनचर्या जीवन के बड़े दायरे में समा जाती है। नीरस कार्यों और ओछे मूल्यों की उकताहट का स्थान परमेश्वर के संसार की सुन्दरता तथा परमेश्वर के लोगों की संगति के आनन्द की धन्यवाद के साथ स्तुति ले लेती है। जीवन एक साहसिक कार्य बन जाता है। जीने का आनन्द एक नियम बन जाता है।

कहते तो हैं परन्तु जीवन की वास्तविकता से इनका कोई लेना-देना नहीं है? ऐसा कदापि नहीं है। हम प्रेरणा देने वाले परमेश्वर के उन लोगों पर प्रभाव की बात कर रहे हैं जो

उसके आगे अपने आपको समर्पित कर देते हैं। हम जान सकते हैं कि ऊपर दिया गया विश्लेषण इच्छापूर्वक सोच नहीं है। हमें ऐसी बातें लिखी हुई मिल जाती हैं जिनसे पता चलता है कि उसका प्रभाव अपने लोगों के जीवन में कैसे प्रेरणादायक हो सकता है।

अब्राम को भविष्य और परमेश्वर के साथ अपने सम्बन्ध की चिन्ता व्यक्त करने पर बड़ा आश्वासन दिया गया था। उसे कहा गया था, ''आकाश की ओर दृष्टि करके तारागण को गिन, क्या तू उनको गिन सकता है? ... तेरा वंश ऐसा ही होगा।' उसने यहोवा पर विश्वास किया; और यहोवा ने इस बात को उसके लेखे में धर्म गिना'' (उत्पत्ति 15:5, 6)। अब्राम को उसकी आने वाली पीढ़ियों के लिए प्रतिज्ञा देकर और यह बताकर प्रतिष्ठा दी गई कि परमेश्वर में उसका विश्वास गलत नहीं था।

यहोशू के दिनों में इस्राएलियों के लिए जीवन आसान नहीं था। उनका महान अगुआ, मूसा उनसे ले लिया गया था। आगे के समय का कुछ पता नहीं था। कनान के आक्रमण का खतरा था। शक्तिशाली, सुरक्षा के अतिरिक्त साधन प्राप्त लोगों के साथ खतरनाक युद्ध करने पड़ते थे। ऐसे तनावपूर्ण समय में यहोशू लोगों की अगुआई कैसे कर पाया था? ''यहोवा ने यहोशू से कहा, आज के दिन से मैं सब इस्राएलियों के सम्मुख तेरी प्रशंसा करना आरम्भ करूंगा, जिससे वे जान लें कि जैसे मैं मूसा के संग रहता था वैसे ही मैं तेरे संग भी हूं'' (यहोशू 3:7)। यहोशू को परमेश्वर की ओर से बड़ी दलेरी मिली थी। कठिन समयों में भी जब हम मानते हैं कि परमेश्वर हमारी अगुआई कर रहा है तो कठिन समयों में भी, बाधाओं को अवसर के रूप में देखा जाता है।

हन्ना एप्रैम के पहाड़ी देश के निवासी एल्लकाना की पत्नी थी। कई वर्ष पहले उनका विवाह हुआ था। उसका पति उससे बहुत प्रेम करता था। परन्तु वह दुखी थी क्योंकि वह उसे पुत्र न दे सकी थी। दूसरी सहस्राब्दी ई.पू. के दौरान प्राचीन काल में पूर्वी देशों के निकट रहने वाली महिलाओं के लिए नि:संतान होना बहुत बड़ा कष्ट होता था। विवाहित महिलाएं बांझपन होने को एक भारी बोझ मानती थीं। निश्चय ही हन्ना भी ऐसी ही एक महिला थी। इसलिए, शीलो में उसने परमेश्वर के मन्दिर में, सच्चे मन से एक पुत्र के लिए प्रार्थना की। उसकी प्रार्थना का उत्तर मिल गया था। आनन्द से उसने अपने पुत्र का नाम ऐसा रखा जो परमेश्वर के प्रति उसकी कृतज्ञता को दिखाता था: उसने उसका नाम शमूएल रखा।[1]

> और हन्ना ने प्रार्थना करके कहा, मेरा मन यहोवा के कारण मगन है; मेरा सींग यहोवा के कारण ऊंचा हुआ है। मेरा मुंह मेरे शत्रुओं के विरुद्ध खुल गया, क्योंकि मैं तेरे किए हुए उद्धार से आनन्दित हूं। यहोवा के तुल्य कोई पवित्र नहीं, क्योंकि तुझ को छोड़ और कोई है ही नहीं; और हमारे परमेश्वर के समान कोई चट्टान नहीं है (1 शमूएल 2:1, 2)।

एक हज़ार से अधिक वर्ष बाद हम एक और स्त्री के बारे में पढ़ते हैं, जिसने परमेश्वर की ओर से समाचार पाकर हर्ष से उसकी स्तुति की। वह उसे पवित्र आत्मा के द्वारा एक

बालक की आशीष देने वाला था। उसका नाम यीशु होना था (मत्ती 1:20, 21)। उसके जीवन में कितना बड़ा परिवर्तन था! इस उद्देश्य, मिशन तथा अवसर का क्या अर्थ था! उसकी कृतज्ञता तथा आनन्द गीत में व्यक्त किया गया था। ''मेरा प्राण प्रभु की बड़ाई करता है। और मेरी आत्मा मेरे उद्धार करने वाले परमेश्वर से आनन्दित हुई। ... क्योंकि उस शक्तिमान ने मेरे लिए बड़े-बड़े काम किए हैं, और उसका नाम पवित्र है'' (लूका 1:46-49)।

परमेश्वर के प्रभाव में रहकर कोई कितना आश्वस्त तथा सकारात्मक हो सकता है, इसका सबसे बड़ा उदाहरण पौलुस है। एक प्रेरित के रूप में उसका जीवन हलचल तथा तनाव से भरा हुआ था। पौलुस ने परमेश्वर के प्रति विश्वासयोग्य होने के कारण बहुत सी यातनाएं झेलीं, हज़ारों मील तक गया और कई वर्ष जेलों में बिताए थे। क्या वह आश्वस्त था? उसने कहा था, ''जो मुझे सामर्थ देता है उस में मैं सब कुछ कर सकता हूं'' (फिलिप्पियों 4:13)। क्या वह सकारात्मक था? उसने कहा था, ''निदान, हे मेरे भाइयो, प्रभु में आनन्दित रहो'' (फिलिप्पियों 3:1क)। क्या वह संतुष्ट था? उसने कहा था, ''मैंने यह सीखा है कि जिस दशा में हूं, उसी में सन्तोष करूं'' (फिलिप्पियों 4:11ख)। जीवन का उसने अवलोकन कैसे किया? उसने कहा था:

> मैं अच्छी कुश्ती लड़ चुका हूं मैं ने अपनी दौड़ पूरी कर ली है, मैं ने विश्वास की रखवाली की है। भविष्य में मेरे लिए धर्म का वह मुकुट रखा हुआ है, जिसे प्रभु, जो धर्मी, और न्यायी है मुझे उस दिन देगा और मुझे ही नहीं, बरन उन सब को भी, जो उसके प्रगट होने को प्रिय जानते हैं (2 तीमुथियुस 4:7, 8)।

बाइबल से इन उदाहरणों के अतिरिक्त और भी उदाहरण दिए जा सकते थे। परन्तु उनमें भी यही सच्चाई थी जो इनमें है। युगों से, अनगिनत लाखों-करोड़ों लोगों ने परमेश्वर के इन आरम्भिक अनुयायियों जैसा अनुभव पाया है। परमेश्वर वास्तव में बड़ा उत्साह देने वाला है। वह हमें ऊंचा उठाता है। वह हमारी अगुआई करता है। वह हमारे जीवन को अर्थ तथा महत्व देता है। वह हमें अनन्त जीवन के लिए भी बुलाता है। परमेश्वर के प्रेरणा देने वाला होने में कोई भी संदेह की बात नहीं है।

बाइबल की उसकी प्रेरणा

परमेश्वर अपने प्रेरणा देने के स्वभाव को दूसरी प्रकार अर्थात पवित्र शास्त्र में प्रेरणा देकर व्यक्त करता है, जो पवित्र शास्त्र की विश्वसनीयता का आधार है। बाइबल बताती है कि परमेश्वर में भरोसा रखकर और उसकी आज्ञा मानकर कैसे इब्राहीम, यहोशू, एलिय्याह, मरियम, स्तिफनुस और बहुत से दूसरे लोग विजयी जीवन जी सके थे। नि:संदेह, यदि पवित्र शास्त्र के सत्य होने के आश्वासन के बिना हमें यह पता नहीं चल सकता कि ये ''सच्ची कहानियां'' हैं। परन्तु, हमें तो आश्वासन है।

बाइबल पुरातत्व तथा बाइबल के समय के समकालीन प्राचीन लेखों जैसे मसीही

प्रमाणों के विशाल क्षेत्र ने बाइबल के इतिहास की मान्यता को प्रमाणित करने के लिए एक लम्बी दूरी तय की है।[2] बाइबल को उच्च दृष्टिकोण देने के लिए इन स्रोतों का अध्ययन लाभदायक हो सकता है। जो उन्नति आज हो रही है उसके लिए हम परमेश्वर के धन्यवादी हैं। ये प्रमाण बाइबल में हमारे भरोसे को बढ़ाते हैं, परन्तु ऐसा वे हमें अपनी *ऐतिहासिक* यथार्थता का ज्ञान देकर करते हैं। यदि बाइबल जो होने का दावा करती है अर्थात यह कि यह परमेश्वर का वचन है तो इसे यथार्थ *होना* आवश्यक है। हम पढ़ते हैं, ''*हर एक पवित्रशास्त्र परमेश्वर की प्रेरणा से रचा गया है* और उपदेश, और समझाने, और सुधारने, और धर्म की शिक्षा के लिए लाभदायक है'' (2 तीमुथियुस 3:16)।

''हर एक पवित्र शास्त्र परमेश्वर की प्रेरणा से रचा गया'' वाक्यांश को यूनानी भाषा के वाक्यांश (*pase graphe theopneustos*) में देखने पर विभिन्न अनुवादों से उत्पन्न अनेकार्थता का पता चलता है।[3] यह अनेकार्थता यूनानी शब्द *theopneustos* के कारण होती है जिसका अर्थ परमेश्वर की सांस से है, और लातीनी भाषा के *divinitus inspirata* से अनुवादित होकर ''परमेश्वर की प्रेरणा'' बन जाता है। इस प्रक्रिया में ''परमेश्वर की सांस से बाहर'' का अर्थ ''परमेश्वर की सांस के अन्दर'' हो चला है। 2 तीमुथियुस 3:16 में पौलुस ज़ोर देकर कह रहा था कि पवित्र शास्त्र परमेश्वर की प्रेरणा देने वाली शक्ति का परिणाम है और हमारे लिए लाभदायक है। वास्तव में, बाइबल में हर जगह परमेश्वर की ''सांस बाहर जाने'' के द्वारा उसकी सृजनात्मक शक्ति का महान विषय मिलता है। हम परमेश्वर द्वारा मानवीय सृजना के समय उसके इस प्रदर्शन का अध्ययन कर चुके हैं। भजन 33:6 में हम उसकी सृष्टि के वर्णन के उसके श्वास से बनने का चित्र देख सकते हैं: ''आकाशमण्डल यहोवा के वचन से, और उसके सारे गण उसके मुंह की श्वास से बने'' (भजन संहिता 33:6)। इस प्रकार हम ''परमेश्वर के श्वास निकलने'' को उसका उद्देश्यपूर्ण करने के लिए उसकी सामर्थ निकलने के रूप में देखते हैं। जीवन देने, संसार की सृष्टि करने या अपने वचन को लिखवाने के लिए उसने यही ढंग अपनाया। *जिस प्रकार सृष्टि का अस्तित्व ''परमेश्वर की सांस'' से हुआ, वैसे ही बाइबल भी उसके ''श्वास'' से दी गई है।* दोनों ही उसकी सामर्थ तथा कार्य की उपज हैं।

मसीही प्रमाणों के लिए तो हम धन्यवाद करते ही हैं जो बाइबल की *ऐतिहासिक* यथार्थता का संकेत देते हैं, परन्तु परमेश्वर के वचन के लिए धन्यवाद तथा प्रेम विशेषकर हमारे विश्वास की बात है। परमेश्वर के *लिखित* वचन के पास जाकर हम पाते हैं कि हमारा विश्वास यहीं से बना, पुरातत्व या किसी अन्य विज्ञान से नहीं (रोमियों 10:15-17)। परमेश्वर के लिखे हुए वचन की सामर्थ ही विश्वास उत्पन्न करती है और विश्वास को स्थिर करती है। बाइबल में हमें एक अव्यक्त शक्ति मिलती है जिसका अनुभव हमें कहीं और नहीं हो सकता। हम तूफ़ान, भूकम्प, ज्वारभाटा की लहरों और जंगल की आग आदि भड़काने वाली शक्ति को जानते हैं। पवित्र शास्त्र में हम एक ऐसी शक्ति को देखते हैं जो इतनी जबरदस्त है कि मनुष्य के जीवन को बदलकर उसका उद्धार कर सकती है! यह स्रोत इन विनाशकारी शक्तियों से, पाप की विनाशकारी शक्ति से और उस विनाशकारी शक्ति से

भी अधिक शक्तिशाली है। जिसका सामना हम जन्म से करते हैं और उसे मृत्यु कहते हैं।

यह शक्ति हमें स्वतन्त्र कर सकती है (यूहन्ना 8:32)। भजन लिखने वाले ने कहा है, ''तेरा वचन मेरे पांव के लिए दीपक, और मेरे मार्ग के लिए उजियाला है'' (भजन संहिता 119:105)। यीशु के विषय में प्रेरित यूहन्ना ने कहा है, ''और वचन देहधारी हुआ; और अनुग्रह और सच्चाई से परिपूर्ण होकर हमारे बीच में डेरा किया, और हम ने उसकी ऐसी महिमा देखी, जैसी पिता के एकलौते की महिमा'' (यूहन्ना 1:14)। बाइबल में हम परमेश्वर के वचन को मनुष्य के रूप में देखते हैं। हम उसे उसके रूप में देखते हैं जिसके द्वारा हमें फिर अपने घर ले जाया जाता है (यूहन्ना 14:1-6)। बाइबल में, जो कि आत्मा की प्रेरणा प्राप्त लोगों द्वारा लिखी गई, हम एक सबसे अधिक प्रेरणा देने वाले व्यक्ति से मिलते हैं। उसने कहा था, ''मैं इसलिए आया कि वे जीवन पाएं, और बहुतायत से पाएं'' (यूहन्ना 10:10ख)। हमारा परमेश्वर सचमुच कई प्रकार से प्रेरणा देने वाला है।

पाद टिप्पणियां

[1]शमुएल का अर्थ है ''एल [परमेश्वर] का नाम'' (फ्रांसिस ब्राउन, एस. आर. ड्राइवर, और चार्लस ए. ब्रिगस, *ए हिब्रयु एण्ड इंग्लिश लेक्सिकन ऑफ़ द ओल्ड टैस्टामेंट* [ऑक्सफोर्ड: क्लेयरडन, 1958], 1028)। [2]''... यह ज़ोर देने का अर्थ कि बाइबल और उसका संदेश एक शून्यता से निकला जिसका सम्बन्ध अतीत या आस-पास की संस्कृतियों से नहीं है, बाइबल के विचार और बाइबल की दुनिया के महत्व को न समझना है। इसके अलावा, इसमें बाइबल की बात को गलत समझने का गंभीर जोखिम भी है। अनादि परमेश्वर का समय रहित संदेश मनुष्य को समय पर दिया गया है: ...।'' (हैरी थॉमस फ्रैंक, बाइबल आर्कियोलॉजी एण्ड फ़ेथ [नैशविल्ले: अबिंगडन, 1976], 12)। [3]तुलना के लिए KJV, RSV, NAB, NEB और NIV देख सकते हैं।